ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में जीवन मूल्यों की उपादेयता

[1]डॉ0 कृष्ण कुमार सिंह

[1]एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बी.एड. विभाग, रामनगर पीजी कॉलेज, रामनगर, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

Abstract

एक स्वतंत्र राष्ट्र में कुछ समान जीवन मूल्यों, जैसे– धर्म निरपेक्षता, आर्थिक सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक प्रणाली, समता, समान अवसर व समान अधिकार की सुनिश्चितता आदि पर हम सभी स्पष्टतः सहमत हैं। इन सभी मूल्यों और विचारों को हमारे संविधान में प्रमुख स्थान प्राप्त है अतः शिक्षाकर्मियों के लिए श्रेयस्कर कदम होगा कि इन सार्वभौमिक मूल्यों को सुस्थापित करने के लिए अपेक्षित शिक्षा की ऐसी योजनाएं और कार्यान्वयन की रणनीतियां बनाई जाएँ, जो अपने लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकें।

शब्द संक्षेप– वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य, जीवन मूल्य, उपादेयता, जनसंचार माध्यम और प्रद्योगिकी।

Introduction

आज विश्व के बदलते परिपेक्ष्य और संक्रमणकालीन मूल्य विहीनता को देखते हुए शिक्षा के क्षेत्र में विचारधारा और मूल्यों के परस्पर संबंधों की चर्चा ज्वलंत बनी हुई है। आधुनिक युग में खासकर जनसंचार माध्यम और प्रद्योगिकी विकास ने विचारधारा को मूल्य और शिक्षा के अंतःसंबंधों को तलाशने के लिए मजबूर किया है। हमारी चिंतन प्रक्रिया में विचारधारा ने निःसंग रूप से मौजूद होती है। मानविकी और समाज विज्ञान की चिंतन धाराएं भी विचारधारा से पुष्ट होकर सैद्धांतिक रूप ग्रहण करती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक तरफ हमारी विचारधाराएं हैं, तो दूसरी तरफ मानव सभ्यता के शाश्वत मूल्य हैं। वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया में ये शाश्वत मूल्य कहां स्थान प्राप्त करते हैं। यह आज के संदर्भ में अत्यंत महत्व का विषय है।

यह सर्वविदित है कि मानव के सर्वांगीण विकास में शिक्षा को अहम भूमिका होती है। अतः हमारी चिंतन प्रक्रिया के शैक्षिक निहितार्थों में शाश्वत मूल्य अनिवार्यतः विद्यमान होने चाहिए। शिक्षा के हर क्षेत्र में हमारी संस्कृति संस्कार, सोच और चिंतन प्रतिबिम्बित होते हैं। इसलिए बहुआयामी विचारधाराओं के शैक्षिक निहितार्थों और मूल्यों के पारस्परिक संबंधों का वर्तमान शिक्षा क संदर्भ में विश्लेषण किया जाना चाहिए वर्तमान। वर्तमान शिक्षा आज एक ही साथ दोहरे संकट से ग्रस्त है। जहां उसकी सामाजिक प्रासंगिकता पर बड़े पैमाने पर सवाल उठाए जा रहे हैं, वही सभी प्रबुद्ध नागरिक जीवनमूल्यों के ह्रास के बारे में उसके खतरनाक निहितार्थों को गहराई से महसूस कर रहे हैं। संकट के ये दोनों पहलू कम–से– कम ऊपर से देखने पर असंबद्ध दिखाई देते हैं, मगर वस्तुतः उनमें पारस्परिक संबंध

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

पाया जाता है। अगर हम सार्थक एवं मूलभूत ढंग से उस संकट के समाधान में दिलचस्पी रखते हैं, तो यह परम आवश्यक है कि हम इस संबंध में को समझें।

वर्तमान शैक्षिक परिवेश के प्रति घोर अनास्था एवं श्रद्धा ने हमारी सांस्कृतिक चेतना को प्रसुप्त कर दिया है। फलस्वरुप हम मूल्यों के संकट के युग से गुजर रहे हैं। स्वार्थ ने बुद्धि को कुंद कर दिया है, भौतिक आकांक्षाएं प्रबल हो उठी हैं। औचित्य उपेक्षित है, धैर्य गायब हो गया है तथा कृ तज्ञता का भाव मर चुका है। अराजकता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र तथा व्यक्तित्व के समस्त आयामों को दुष्प्रवृत्तियों का बोध करा रही हैं। परिणामतः समेकित शैक्षिक वातावरण मूल्य संकट के दौर से गुजर रहा है।

अनेकानेक चिंतकों, दार्शनिकों एवं शिक्षाविदों ने शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यों की उपादेयता तथा उनके महत्व को स्वीकारा है तथा शिक्षा के द्वारा मूल्यों के सृजन, उनकी स्थापना तथा व्यक्तित्व के समन्वित विकास की संकल्पना की है। कहना न होगा कि शिक्षा का प्रकाश स्तंभ है, जिससे हमारे जीवन का पथ प्रदर्शक होता है। चूँकि जीवन के लक्ष्यों में विभिन्नता पाई जाती है इसलिए शिक्षा के लक्ष्यों में भी विविधता स्वभाविक है।

आधुनिकता एवं सूचना तथा संचार क्रांति की तथाकथित चकाचौंध ने शिक्षा की पारंपरिक अवधारणा,अव स्थापना एवं उद्देश्यों में भी व्यापक विचलन पैदा किया है। फलस्वरूप उनके प्रभाव में भी दूरगामी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। वर्तमान शिक्षा की भूमिका रोजी–रोटी कमाने तक संकुचित होती जा रही है और इसी उद्देश्य से शिक्षा पर निवेश भी होने लगा है।शिक्षा– प्रणाली में इस प्रकार की प्रवृत्ति बढ़ने का मूल कारण मानव व्यवहार में अस्थिरता एवं भौतिकता की गलाकाट प्रतिस्पर्धा है, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक नैतिकता के साथ–साथ भौतिक वातावरण पर भी विध्वंसक प्रभाव पड़ रहा है।

शिक्षा के वर्तमान दर्शन के मूल तत्वों का विस्तृत अध्ययन करने से अनेक चिंताजनक एवं उद्घाटित होते हैं, जिनके कारण शिक्षा एवं जीवन–मूल्यों के क्षेत्र में गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली को जब सामाजिक आर्थिक कार्यकलापों के दूसरे सभी क्षेत्रों पर लागू किया जाता है, तो इस बात पर संदेह पैदा होता है कि व्यापक परिवर्तनों की जन्म देना तो दूर उसके तनावों को झेलने में वह समर्थ होगी अथवा नहीं।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत किसी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में छात्र किसी उपकरण या किसी दृष्टिकोण को सहायता से कुछ संवृत्तियों के बोध के उपायों को सीखते हैं, चाहे ये संवृत्तियों हों ,भौतिक हों या सौंदर्य शास्त्रीय हों । इसके अलावा उन्हें यह भी सिखाया जाता है कि कुछ विधियों के द्वारा अनुभवाश्रित साक्ष्यों का मूल्यांकन उनकी व्याख्या कैसे की जाये। चूँकि कालक्रम में इसके लिए अनेक दृष्टिकोण विकसित हुए हैं। इसलिए ऐसी जांच– पड़तालों से भी छात्र का परिचय होता है। एक उच्चतर स्तर पर छात्रों को विशेषीकरण के अलग–अलग क्षेत्रों में, इस बारे में किए जा रहे मौजूदा, अग्रगामी प्रयासों से भी परिचित कराया जाता है। अगर प्रशिक्षण के इस चरण के बाद भी छात्र अकादमिक जगत में बना रहता है तो वह शोधकर्ताओं के समूह में शामिल हो जाता है, जो या तो मौजूदा उपकरणों को और प्रखर बना रहे हैं या नए उपकरण विकसित कर रहे हैं।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

संपूर्ण विषय–वस्तु पर दृष्टिपात करने के पश्चात प्रतीत होता है कि शिक्षा में जीवन– मूल्यों के ह्रास के संकट का तकाजा है कि हम ऐसे दृष्टिकोण विकसित करें, जिनमें मूल्यों के समाकलित विकास पर समग्रता से विचार किया जाए। इनमें बाहरी और अंतर्निहित, दोनों प्रकार के पक्षों का समावेश होना चाहिए।

खैर, दौर कोई भी हो, वह मानवतावादी विचार प्रासंगिक होने चाहिए। संस्कृति का विचार उस शांति और समृद्धि के इर्द–गिर्द होना चाहिए, इसे अशोक ने प्रचारित किया और विवेकानंद ने भी। भारतीय दर्शन और संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं में, वसुधैव कुटुंबकम के साथ–साथ सर्वे भवन्तु सुखिनः जैसे संदेश भी शामिल है, यह हमें कतई भूलना नहीं चाहिए। महामारी के वक्त दुनिया का साझा जीवन मूल्यों ने ही बचाया है। दुनिया सामरिक शक्ति से नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों से बचेगी

संदर्भ :

(1) पांडेय , डॉ राम शकल (2003); उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक प्रकाशन, आगरा–2
(2) सक्सेना, एम.आर स्वरूप, चतुर्वेदी, शिखा; उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो
(3) सोनी रामगोपाल (2004–05), उदयोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक, एच.पी.भार्गव बुक हाउस
(4) पचौरी, डॉक्टर गिरीश (2010); उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, लॉयन बुक डिपो, मेरठ
(5) माथुर, डॉ. एस.एस (1997); शिक्षक के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार ,विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
(6) अग्रवाल जे.सी (2012) उदीयमान; भारतीय समाज में शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2